रोल नं. | | | | | | | | |

101

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

401 (ICA)

2017

हिन्दी

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश : (i) इस प्रश्न पत्र के दो खण्ड 'अ' और 'ब' हैं। दोनों खण्डों में पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रश्नों के उत्तर यथा सम्भव क्रमवार दीजिए।

(ii) प्रश्नों के निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित हैं।

खण्ड – 'अ'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

मनुष्य प्रायः स्वभाव से धर्मभीरू है। कदाचित इसीलिए हमारे पूर्वजों ने सामाजिक वर्जनाओं को अनिवार्य बनाने के निमित्त उन्हें धर्म से सम्पृक्त कर दिया ताकि ठीक से उनका अनुपालन हो सके। कृष्ण ने गीता में कहा है– 'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्' अर्थात् वृक्षों में मैं पीपल हूँ।

कुछ कथित प्रगतिशील लोग भले ही इसे हमारी अंध धार्मिकता कहें किन्तु पर्यावरण के संरक्षण में हमारे ऋषि–मुनियों की दिव्यमेधा ने अतुलनीय भूमिका का निर्वहन किया है। उक्त वैचारिक आस्था से हमारे पीपल और बरगद कटने से बच गए। पर्यावरण के शोधन के साथ ही बादल–वर्षा–वृक्ष और वनस्पतियों का एक नैसर्गिक चक्र है। इस नैरन्तर्य को बनाए रखने के लिए ऋषियों ने सरिताओं को दूषित करने और वृक्षों के काटने के लिए वर्जनाएँ की, जिसका मंतव्य प्राकृतिक संपदाओं को भावी पीढ़ी के लिए अक्षुण्ण रखना था। आधुनिक सतत विकास की अवधारणा की खोज भारतीय प्राचीन वाङ्मय में की जा सकती है। यही हमारे ऋषियों की थाती है जो आज भी प्रासंगिक और समीचीन है।

वस्तुतः विकास और पर्यावरण परस्पर सापेक्ष एवं एक दूसरे के पूरक हैं। एक की उपेक्षा में दूसरे की पूर्णता नहीं हो सकती। किन्तु मूल्य बदल चुके हैं। हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूल चुके हैं तथा प्रकृति को लूटने–खसोटने की होड़ मची है। हम मूल्यविहीन जीवन शैली में जी रहे हैं। प्रकृति के दैवी स्वरूप की अवधारणा विस्मृत हो गई है।

(क) 'धर्मभीरू' शब्द का अर्थ बताइए तथा यह भी स्पष्ट कीजिए कि धर्मभीरू का आशय क्या है ? 3

(ख) सामाजिक वर्जनाओं को धर्म से जोड़ने की मूल संकल्पना क्या रही ? 3

(ग) पर्यावरण संरक्षण में हमारे ऋषि–मुनियों ने दिव्य भूमिका का निर्वहन किस रूप में किया ? 3

(घ) मूल्यविहीन जीवन शैली में जीने का आशय स्पष्ट कीजिए। 3

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 3

2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिये – 10

(क) राष्ट्र निर्माण में युवाशक्ति की भूमिका।

(ख) लोकतंत्र में लोकाकांक्षा।

(ग) शिक्षा का वर्तमान स्वरूप।

(घ) जीवन में लोकोपकार का महत्व।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए – 1×5 = 5

(क) पीतपत्रकारिता से आप क्या समझते हैं ?

(ख) जन संचार का तेजी से लोकप्रिय हो रहा ऐसा माध्यम बताइए जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा, पुस्तकालय आदि सारे गुण हों।

(ग) समाचार किसे कहते हैं ?

(घ) पेड न्यूज किसे कहते हैं ?

(ङ) एंकरबाइट (कथन) क्या है ?

4. 'प्रजातंत्र में मताधिकार का महत्व' **अथवा** 'जनसंचार माध्यमों की आजादी' विषय पर लगभग 150 शब्दों में एक आलेख लिखिए। 5

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी <u>एक</u> पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए – 2×3 = 6

(i) मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना–बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

(क) कवि जग से नाते का निषेध क्यों करता है ?

(ख) बना जग मिटाने का क्या आशय है ?

(ग) कवि किस रूप में और कैसे स्वयं को जग से पृथक बताता है ?

(ii) हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता ।।
कपि पुनि बैद तहां पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा ।।

(क) हनुमान से मिलकर राम हर्षित क्यों हुए ?

(ख) राम को कृतज्ञ कहने का क्या आशय है ?

(ग) भालू और बन्दर खुश क्यों हुए ?

6. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 2×2 = 4

घन, भेरी–गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !
फिर–फिर
बार–बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन–सुन घोर वज्र–हुंकार।
अशनि–पात से शापित उन्नत शत–शत वीर,
क्षत–विक्षत हत अचल–शरीर,
गगन–स्पर्शी स्पर्धा धीर।

(क) घन गर्जन का प्रसुप्त अंकुर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(ख) 'अशनि–पात से शापित उन्नत शत–शत वीर' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं <u>दो</u> प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 2×2 = 4

(क) 'कैमरे में बन्द अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की अभिव्यक्ति है। इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(ख) 'बादल राग' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है ?

8. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 2×3 = 6

(i) उसने कीनू कालीन पर उलट दिए। टोकरी खाली की और नमक की पुड़िया उठाकर टोकरी की तह में रख दी। एक बार झांककर उसने पुड़िया को देखा और उसे ऐसा महसूस हुआ मानों उसने अपनी किसी प्यारे को कब्र की गहराई में उतार दिया हो ! कुछ देर उकडूँ बैठी वह पुड़िया को तकती रही और उन कहानियों को याद करती रही जिन्हें वह अपने बचपन में अम्मा से सुना करती थी, जिनमें शहजादा अपनी रान चीरकर हीरा छिपा लेता था और देवों, खौफनाक भूतों तथा राक्षसों के सामने से होता हुआ सरहदों से गुजर जाता था। इस जमाने में ऐसी कोई तरकीब नहीं हो सकती थी वरना वह अपना दिल चीरकर उसमें यह नमक छिपा लेती। उसने एक आह भरी।

फिर वह कीनुओं को एक–एक करके टोकरी में रखने लगी, पुड़िया के इधर–उधर, आसपास और फिर ऊपर, यहाँ तक कि वह बिल्कुल छिप गई। आश्वस्त होकर उसने हाथ झाड़े, सूटकेस पलंग के नीचे खिसकाया, टोकरी उठाकर पलंग के सिराहने रखी, और लेटकर दोहर ओढ़ ली।

(क) 'अपने किसी प्यारे को कब्र की गहराई में उतार दिया हो' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ख) बचपन में किसने किससे क्या कहानियां सुनी थीं ?
(ग) पुड़िया के छिप जाने पर वह क्यों आश्वस्त हो गई ?

(ii) जाति–प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम–श्रमिक–समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धान्त के विपरीत जाति–प्रथा का दूषित सिद्धान्त यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता–पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

(क) श्रम–विभाजन को जाति प्रथा का आधार मानना कहाँ तक उचित है ? लेखन की दृष्टि में इस व्यवस्था में क्या दोष है ?
(ख) सक्षम श्रमिक समाज के निर्माण के लिए क्या किया जाना चाहिए ? क्या इसमें शिक्षा व्यवस्था का कोई योगदान हो सकता है ?
(ग) जाति–प्रथा के गुण–दोषों की संक्षेप में समीक्षा कीजिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 3×2 = 6

(क) पठित पाठ के आधार पर बताइए कि भक्तिन के सम्पर्क में आने से लेखिका देहाती कैसे हो गई ?
(ख) 'इन्दर सेना' सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है ? भारतीय सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में नदियों का क्या महत्व है ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर बताइए।
(ग) लेखक ने 'शिरीष' को 'कालजयी अवधूत' की संज्ञा क्यों दी ? स्पष्ट कीजिए।

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 2×2 = 4

(क) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
(ख) 'जूझ' कहानी के कथानक के आधार पर उसके शीर्षक की उपयुक्तता पर प्रकाश डालिए।
(ग) 'सिन्धु–सभ्यता साधन–सम्पन्न होने पर भी आडंबर–विहीन थी।' पठित पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

11. यशोधर बाबू अपनी पत्नी की तरह समय के साथ ढलने में सफल नहीं होते, क्यों ? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर उक्त कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 5

अथवा

पठित पाठ के आधार पर मुअनजो–दड़ो के शिल्प–सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

खण्ड – 'ब'

12. निम्नांकित गद्यांशं पठित्वा केवलं त्रीन् प्रश्नान् पूर्णवाक्येन उत्तरत – 2×3 = 6

(निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर केवल तीन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत के पूर्ण वाक्य में दीजिए)

ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायत इति कथयन्ति भूकम्पविशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यदा खनिजमृत्तिकाशिलादिसञ्चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् उपेत्य दुर्वारगत्या पर्वताग्रमुखं विदार्य बहिर्निष्क्रामति। धूममस्मावृत्तम् जायते तदा गगनम्। सेल्सियशतापमात्राया अष्टशताटतामुपगतोऽयं लावारसो यदा नदीवेगेन प्रवहति तदा पार्श्वस्थग्रामा नगराणि वा तदुदरे क्षणेनैव समाविशन्ति। आकाशे उच्छलन्तीभिः शिलाभिर्निहन्यन्ते पिपीलिका इव विवशाः प्राणिनः। ज्वालामुद्गिरन्त एते पर्वता अपि भीषणं भूकम्पं जनयन्ति।

(क) कीदृशानां पर्वतानां विस्फोटैः भूकम्पो जायते ?

(ख) पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निः कं क्वथयति ?

(ग) आकाशे उच्छलन्तीभिः शिलाभिः पिपीलिका इव के निहन्यन्ते ?

(घ) पिपीलिका इव विवशाः के भवन्ति।

13. अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा द्वौ प्रश्नौ पूर्णवाक्येन उत्तरत – 2×2 = 4

(निम्नलिखित श्लोक को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत के पूर्ण वाक्य में दीजिए)

हे जिह्वे कटुकस्नेहे मधुरं किं न भाषसे।
मधुरं वद कल्याणि लोकोऽयं मधुरप्रियः ।।

(क) अस्मिन् श्लोके कविः कं सम्बोधयति ? (ख) कटुक स्नेहा कस्याः विशेषणमस्ति ? (ग) मधुरप्रियः कः अस्ति ?

14. अधोलिखित प्रश्नेभ्यः पञ्च प्रश्नान् संस्कृत भाषायां पूर्णवाक्येन उत्तरत – 2×5 = 10

(निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर संस्कृत के पूर्ण वाक्यों में दीजिए)

(क) अम्भोदाः कुत्र वसन्ति ?

(ख) मण्डूकस्य साफल्यस्य कारणं किम् आसीत् ?

(ग) कस्य आश्रयः सर्वदा कष्टकरः ?

(घ) नीरजः किमर्थं शीघ्रं भोजनम् इच्छति ?

(ङ) युवकस्यवेशः कीदृशः आसीत् ?

(च) केषाम् अचैतन्यं न विद्यते ?

(छ) अग्रजस्य प्रस्तावं कः अङ्गीकृतवान् ?

(ज) कक्षा प्रमुखः कः अस्ति ?

15. निम्नांकित शब्द सूचीतः शब्दान् चित्वा चत्वारि वाक्यानि उत्तरपुस्तिकायां लिखत – 1×4 = 4

(निम्नलिखित शब्दों में से चार शब्दों का संस्कृत में वाक्य प्रयोग कीजिए)

शब्दसूची –	भीषणः, कथम्, भीतः, जायते, इदानीम्, राष्ट्रम्, अध्ययनम्, गर्जन्ति, पादपः, जलजम्

16. (क) समास विग्रहं कृत्वा समासस्य नामोल्लेखं च कुरुत (समास विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए।) – 1

चन्द्रमौलिः **अथवा** देवेशः

(ख) कारकस्य निर्देशनं कुरुत (कारक का निर्देशन कीजिए) – मातुः **अथवा** गुरवे 1

(ग) 'फल' **अथवा** 'गज' शब्दस्य द्वितीया बहुवचने रूपं लिखत। 1

('फल' **अथवा** 'गज' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप लिखिए।)

(घ) 'पठ्' अथवा 'लिख्' धातोः लोटलकार–प्रथमपुरुष–एकवचनस्य रूपं लिखित। 1

(पठ् अथवा लिख् धातु के लोटलकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप लिखिए)

(ङ) (i) सन्धिं विच्छेद कुरुत (सन्धि विच्छेद कीजिए) – दुर्गुणः **अथवा** कविरागतः 1

(ii) सन्धिं कुरुत (सन्धि कीजिए) – लोकः + अयम् **अथवा** स्पर्शः + तेन 1

अथवा

अस्मिन् प्रश्नपत्रे आगतं श्लोकं विहाय कमपि अन्यं कण्ठस्थं श्लोकं लिखित्वा हिन्दी भाषायाम् तस्य अनुवादं कुरुत। 3+3 = 6

(कोई एक कण्ठस्थ श्लोक, जो इस प्रश्न पत्र में न आया हो, लिखिए और हिन्दी में उसका अनुवाद कीजिए)

****

रोल नं. | | | | | | | | |

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

101

401 (ICB)

2017

हिन्दी

समय : 3 घण्टे]

[पूर्णांक : 100

निर्देश : (i) इस प्रश्न पत्र के दो खण्ड 'अ' और 'ब' हैं। दोनों खण्डों में पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रश्नों के उत्तर यथा सम्भव क्रमवार दीजिए।

(ii) प्रश्नों के निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित हैं।

खण्ड – 'अ'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

इस संसार में प्राणी को हर समय चलते रहना है। गति ही जीवन का सुलक्षण है। सार्थक जीवन वही है, जो कर्मठता व निरन्तर अपने पथ में अग्रसर रहने का पाठ पढ़ाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में 'चरैवेति चरैवेति' का सिद्धान्त–सूत्र बना है। वही मानव विकास की किरणों को देख सकता है, जो आलस्य और उन्माद से बचकर सरल मन के साथ अपने कर्त्तव्य–पथ पर सतत चलता रहे। इस हेतु जीवन को अधोमुख करने वाली सभी कुप्रवृत्तियों से परहेज कर हमें अपने भीतर उदात्त प्रवृत्तियों का संचय करना होगा, तभी देश व दुनिया से, सही अर्थों में, हमारा नाता भी जुड़ सकेगा। गीता दर्शन हमें निरन्तर कर्मपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। कर्म, विकास के पथ को प्रशस्त करता है। सत्कर्म मानव मन में जन्म लेने वाली कुप्रवृत्तियों के दमन का सशक्त साधन है। भगवान श्रीकृष्ण का यह प्रेरणास्पद वचन कि मेरे लिए सब कुछ सुलभ होते हुए भी मैं जनकल्याण के लिए निरन्तर कर्म में लीन रहता हूँ, विशेष अनुकरणीय है। कर्म रहित जीवन पंगु है।

(क) जीवन के सुलक्षण को परिभाषित कीजिए। 3

(ख) जीवन को सार्थक कैसे बनाया जा सकता है ? 3

(ग) विकास की किरणों को देखने के लिए मानव का आचरण कैसा होना चाहिए ? 3

(घ) कुप्रवृत्तियों के दमन का सशक्त साधन क्या है और किस रूप में ? 3

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 3

2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(क) निराश युवा पीढ़ी और समाधान।

(ख) उत्तराखंड में पर्यटन उद्योग और संभावनाएँ।

(ग) भय बिन होय न प्रीति।

(घ) जीवन में श्रम का महत्व।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए– $1 \times 5 = 5$

(क) जनसंचार माध्यम से आप क्या समझते हैं ?

(ख) मौखिक संचार का क्या आशय है ?

(ग) 'विज्ञापन' और 'समाचार' में अन्तर बताइए।

(घ) प्रिंट मीडिया किसे कहते हैं ?

(ङ) टी.वी. किस प्रकार का मीडिया है ?

4. 'राष्ट्र निर्माण में छात्रों की भूमिका' **अथवा** 'मतदान का महत्व' पर लगभग 150 शब्दों का आलेख लिखिए। 5

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 2×3 = 6

(i) यह तेरी रण–तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी–गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !

(क) 'भेरी–गर्जन से सजग सुप्त अंकुर' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) किसका सिर ऊँचा हो रहा है, और क्यों ?

(ग) भेरी कौन बजा रहा है, और कहाँ से बजा रहा है ?

(ii) सुनि दसकंधर बचन तब,
कुंभकरन बिलखान।
जगदबा हरि आनि अब,
सठ चाहत कल्यान ।।

(क) 'कुंभकरन बिलखान' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'दसकंधर' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों ?

(ग) 'जगदबा' शब्द किसका विशेषण है, और उसका हरण करने वाले को अब किस समस्या का सामना करना पड़ रहा है ?

6. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 2×2 = 4

रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हलकी–हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी।

(क) बिजली की तरह चमकते लच्छे का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) तुकांतता व अतुकांतता के आधार पर उक्त कविता का छंद–सौन्दर्य बताइए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 2×2 = 4

(क) 'आत्मपरिचय' कविता में 'शीतल वाणी में आग' का क्या अभिप्राय है ?

(ख) 'बादल राग' कविता में आधार पर 'तुझे बुलाता कृषक अधीर' कवितांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) छोटे चौकोने खेत को कवि 'रस का अक्षय पात्र' क्यों कहता है ?

8. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 2×3 = 6

(i) वह किसी को आकार–प्रकार और वेश–भूषा से स्मरण करती है और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा। कवि और कविता के संबंध में उसका ज्ञान बढ़ा है; पर आदर–भाव नहीं। किसी के लम्बे बाल और अस्त–व्यस्त वेश–भूषा देखकर वह कह उठती है–'का ओहू कवित्त लिखे जानत हैं' और तुरन्त ही उसकी अवज्ञा प्रकट हो जाती है–तब ऊ कुच्छौ करिहैं–धरिहैं ना–बस गली–गली गाउत–बजाउत फिरिहैं।

(क) यहाँ 'वह' सर्वनाम पद किस संज्ञा–पद के लिए प्रयुक्त हुआ है, और किस शीर्षक के लेख से उद्धृत है ?

(ख) कवि और कविता के संबंध में उसका ज्ञान किस वातावरण में बढ़ा है ?

(ग) उसके अनुसार कवि के रूप–रंग एवं चाल–ढाल का वर्णन कीजिए।